International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 183-187

कवि त्रिलोचन शास्त्री बहती ज्ञान गंगा

मीना रानी*

प्रस्तावना

त्रिलोचन शास्त्री मम् प्रिय कवि सरल जीवन एवं उनकी असाधारण रचनाएं, काव्य सृजन, जिंदगी से गुप्तगू करती कविताए देशी संस्कार से ओत–प्रोत प्रकृति प्रेमी, जनता की आस्था के कवि, जीवन यथार्थ को जीते त्रिलोचन का व्यापक काव्य फल कहें जाते हैं।

शास्त्री जी आधुनिक हिन्दी कविता में दरिद्वता को हिला देने वाले फिर भी अद्‌भुत प्रतिभा को दर्शानें वाले जीवन के यथार्थ को जीने वाले कवि माने जाते है। इनकी पूरी काव्य सजृन स्थिरता का बोध कराती है। त्रिलोचन ना केवल हिन्दी बल्कि अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता थे। इनकी कलम से अक्षरों के मोती एक नई चमक को सृजन करते थे। कवि की सवेदनशीलता, गृहणशीलता एवं कलम के माध्यम से कुछ अलग, कुछ नया शब्द चित्र बुनना इनकी प्रतिभा थी। त्रिलोचन की रचनाओं मे सरलता, सहजता, ईमानदारी आदि प्राण तत्व के रूप में पायी जाती है। बातों को शब्दों में पिरोना इनके व्यक्तित्व को दर्शाता है। प्रगतिशील धारा इनके काव्यों में कूट–कूट कर पायी जाती है। सॉनेट की राह पर अकेले चलने वाले कवि शास्त्री जी ही थे। जीवन की गहराई मन की चंचलता व उदासी को शब्दो का रूप देकर 14 पंक्तियॉ में दर्शाने की कला कविवर में ही थी। ऐसे भाव जो कम शब्दों में अधिक कहने की क्षमता रखते हो ऐसी कृति को ही सॉनेट का नाम दिया जाता है।

'' आज मै कृतज्ञ हूँ
जने अनजाने हर किसी का
और यह हर किसी का व्यूह
मुझे त्रासता नही है
अपना जमाना जरा और है
कोई किसी की नहीं सुनता
तो भी हर कोई हर किसी
के पास खडा है।
बिछे हुए मार्ग यहॉ अनेक है।
यहॉ वहॉ दृष्टि जहॉ धुमाइए
उठे पदों की गति की कहानियॉ
अजस्त्रता में अपनी सजीव है। ''

त्रिलोचन लोकहित के सबसे बड़े कवि थे, कविता –कम इनके लिए तप बराबर था जिसके लिए ये किसी भी जोखिम को उठाकर कर्म करने में तत्पर थे। उनकी साधारण लगने वाली कविताऍ भी पाठक पर गहरी छाप छोडती है। लोकसंस्कारी स्वभाव के कारण उनकी कविताओं में स्वतः लक्षित होता है। वे गॉव के कृषक संस्कार के काफी करीब थे जो उन्हें चिरानी पटटी गांव और काशी में मिला था। उनके गांव से उन्हें लोक की समझ मिली, काशी से काव्य –चिंतन की। उनका लोक जिन तत्वों को आलेखित करता है उसमें बडी –बडी

* शोध छात्रा (हिन्दी), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश।

बातों के लिए जगह नही बात को सीधे –सीधे कह देने में विश्वास रखते है। कहने का अर्थ है कि वे हदय से लिखते थे बल्कि यू कहें कि रचना को अपना हदय देते थे। अभिव्यक्ति की इस कला में उनकी भाषिक संरचना का भी कम योग नही है। भाषा के प्रति त्रिलोचन आरम्भ से ही सजग और जागरूक रहे। त्रिलोचन जी की भाषा सहज सरल अनूठी और ठेठ देशज जातीय रूप से ओत–प्रोत है। हिन्दी काव्य जगत में लोकधर्मिता और प्रगतिशील आधुनिकता का निर्वहन त्रिलोचन के अलावा कई अन्य कवियों में भी बखूबी किया जैसे नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि। त्रिलोचन की लोकधर्मिकता आधुनिकता के दायरे में रखना ज्यादा बेहतर जान पड़ता है। यहॉ जीवन से गहरा लगाव जन के साथ तादात्म्यता और संघर्ष में तपकर निखरते जीवन के प्रति विराट निष्ठाबोध ही सच्चे अर्थो में त्रिलोचन को आधुनिक बनाती है।

कवि त्रिलोचन मानते है कि –

“उस जनपद का कवि हूं जो भूखा दूखा है,
नंगा है अनजान है, कला नही जानता,
कैसी होती है क्या है वह नही मानता,
उसके जीवन का सोता इतिहास ही बता
सकता है। वह उदासीन बिल्कुलअपने से ,
अपने समाज से है।

त्रिलोचन की कविताओं में एक आकर्षण ओर है उनकी कविताओं में बडी ज्यादा मात्रा में लोकचित्र और प्रकृति का समायोजन किया गया। वेअपने आस –पास की प्रकृतिको ही सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करते और अपने शब्दो में उतार देते ऐसी प्रतिभा के कवि त्रिलोचन थे।

“हिन्दी की कविता उनकी कविता है जिन की
सासों को आराम नही था और जिन्होनें
सारा जीवन लगा दिया कल्मष को धोने में
समाज के नही काम करने में घिन की
किसी किसी दिन हिन्दी में सतरंगी आभा
विभव भूति की नही मिलेगी जनजीवन के
चित्र मिलेगें घर के वन के सब के मन के
भाव मिलेंगे बोय हुए खेत में डाभा। ”

त्रिलोचन जी का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनको बचपन से ही पढ़ने में रूचि थी, लेकिन परिवार के हालात ठीक नही थे। हर कठिनाइयों को परर करके शास्त्री जी ने पढ़ाई जारी रखी कम उम्र में परिवार का बोण इन पर अपने से पढ़ाई के साथ ये टयूशन भी पढ़ाते थे। दिल्ली से बनारस, काशी, सागर, कलकता, जैसे शहरों में जीवन यापन के लिए संघर्ष किया। कभी नौकरी मिली कभी छोड़ दी बस यही सिलसिला जीवन में बना रहा। इसके बावजूद ज्ञान ता इनमं एक धारा की तरह प्रवाहित था। काशी हिन्दू विद्यालय वाराणसी से एम ए अग्रेजी की उर्दू का ज्ञान लिया। लाहौर से शास्त्री की डिग्री प्राप्त की इसकी कारण इनको शास्त्री जी कहा जाता है। त्रिलोचन जी की कलम जब चलती थी शब्दों के तालमेल की अनुठी माला पिरो सी जाती थी। इनकी कविता की सादगी पाठक का मन मोह लेती थी। प्रत्येक कविता अपने आप में धरती को सोंधी गंध लिए हुए है। एक एक शब्द व पंक्ति जीवन काव्यार्थ और कटुता को इलकती नजर आती है। दिनचर्या से लेकर रात तक सफर बडे रोचक शब्दो में व्यक्त करते थे। व्याकरणिक भाषा भी इन जितनी किसी अन्य कवि ने नही की है। त्रिलोचन जी चलते फिरते शब्द कोष माने जाते है। इसी कारण भी ज्ञान की धारा

कहा जाता है। इनकी नई सोच जो कि शोषितों को नई चेतना देती है इसी चेतना को प्रगतिवादी धारा का नाम दिया गया। त्रिलोचन जी परम्परावादी कवियों से हटकर नई भावनाओं और संवेदनाओं को ग्रहण करने वाले कवि थे। इनके काव्य में रूप विधान की महत्वपूर्ण भूमिका है प्रकृति को देखकर शब्दो का रूप देना इनकी कला है। त्रिलोचन जी साधारण शब्दों में गहरा आघात करने की कला माहिर थे।

मुझमे जीवन की लय जागी
मै धरती का हूं अनुरागी
जडीभूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी।।

इनके रचनात्मक व्यक्तित्व में एक विचित्र विरोधामा भी दिखाई देता है एक ओर यदि उनके यहॉ गॉव की धरती का –सा उबड खाबडपन दिखाई पडेगा तो दूसरी ओर कला की दृष्टि से एक अदभुत वलासिकी कसाव व अनुशासन थी। त्रिलोचन की सादगी की कविताओं को ध्यान से देखा जाए तो उनकी तह में अनुभव की कई परते खुलती दिखाई पड़ेगी। इनके यहॉ आत्मपरक कविताओं की संख्या बहुत अधिक है। अपने बारे में शायद ही किसी कवि ने इतने रगों में और इतनी कविताए लिखी है। कई बार संस्कृत के कठिन और लगभग प्रवाहच्युत शब्द भी उतनी ही सहजता से कविता में प्रवेश करते है और चुपचाप अपनी जगह बना लेते है। त्रिलोचन को हिन्दी में सॉनेट (अंग्रेजी छंद या लघु कविता) को स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। सॉनेट के अतिरिक्त उन्होने गीत बरवै गजल, कुंडलियॉ भी लिखी वह आधुनिक हिन्दी कविता में सॉनेट के जन्मदाता की रचना की। इन्होने रोला छंद को आधार बनाया और बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए चतुष्पदी को लोकरंग में रंगने का काम किया। शब्दों के सामर्थ्य पर अटल विश्वास रखने वाले कवि त्रिलोचन अपनी कविता से स्वंय क्या अपेक्षा करते है यह भी ध्यातव्य है। आज जब सामान्य नागरिक और सहज पाठक की रूचि समकालीन कविता कोई तालमोल नही बैठा पा रही तब त्रिलोचन जैसा कवि अपने काव्य सृजन के प्रति किस तरह सजग है यह देखने लायक है त्रिलोचन का स्वय चित्र देखिए –

वही त्रिलोचन है वह जिसके तन पर गंदे कपड़े है। कपड़े भी कैसे फटे लटे हैं कौन कह सकेगा इसका यह जीवन चन्दे पर अवंलबित है। चलना तो देखों इसका उठा हुआ सिर चौडी छाती , लम्बे बॉहे सधे कदम तेज वे टेढी मेढी राहे मानो डर से सिकुड रही है। किसका –किसका ध्यान इस समय खीच रहा है। त्रिलोचन जानते है कि दुख के तम में जीवन ज्योति जला करती है।

त्रिलोचन के शब्दो में –

क्यों मैंने पाया है इतना नरम कलेजा
जो दुख कभी किसी का नही देख सकता है
ऑखे भर भर जाती है मन थकता। ''

आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर जनपद के समर्थक , शब्द साधक लोक सौन्दर्य और सॉनेट के कर्ता त्रिलोचन अपने जीते जी ही किवदति पुरूष बन गये थे। त्रिलोचन के 17 कविता संग्रह प्रकाशित हुए इनमं से गजल मुक्तक छंद गीत कुंडलियॉ एवं गद्य कविताएं है। लेकिन सबसे ज्यादा ख्याति सॉनेट से मिली। जीवन मे संघर्ष के बल पर ही त्रिलोचन आगे बढ़े। उन्होने कहा है कि जीवन उसका जो कुछ है पथ पर बिखरा है तप तपकर ही भटटी में सोना निखरा है।

त्रिलोचन तनाव और तिरस्कार को बोध मानते हैं तमाम नकारात्मकताओं के झमेले से जीवन की सरूचि और सहजता को हथिया लेने का उनका अपना तरीका है वे भाषा को अपनी संगिनी की तरह जीते है। प्रत्येक कविता का स्वर सन्तुलित शांत एव संयत होते हुए भी अपने ऐन्द्रिक राग से लड़ाई लडती सी लगती है। चीजो को सुरक्षित बचाए रखने की आसक्ति भी कविता को जड़ नही करती बल्कि उन्हें बनाए चले जाने की जीजीविषा उसे अपनी उष्मा और ताप से बॉधे रखती है।

बिजली के खम्भे पर आई बुद्वि जा चढ़ा।
उस को देखे भीड ठॉव पर झूम रही है,
बॅधे हुए हाथ सी उॅचे बॉध से बढा
एक हुलुक्का एक दरेरा घूम रही है,
भीड भीड पर दूसरी रूप रही है
अस्फुट अगणित कंठो की उठ ध्वनि धारा,
महाकाश में मॅडराती है बूम रही है।

ये पंक्तियॉ सॉनेट के रूप विधान पर त्रिलोचन के असाधारण रूप विधान को प्रदार्शित करती है। डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है कि – भीड के वर्णन के लिए शायद ही अंग्रेजी के किसी कवि ने सॉनेट का उपयोग किया हो। त्रिलोचन के लिए सॉनेट एक कुर्ता है जो हर मौसम में धारण किया जा सकता है। इन्होने 1950 के आसपास अपनी कविता के लिए सॉनेट को चुना। सॉनेट का मूल जन्म स्थान इटली माना जाता है। इसके प्रथम प्रवक्ता दॉते माने जाते है। हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी कविता के प्रभाव से आया। चौदह पंक्तियों में कसा –सूधा और अनुशासित काव्य रूप है। अंग्रेजी में सॉनेट क चार प्रकार है – पेट्रार्कियन शेक्सपिरियन स्पेन्सेरियन एव मिल्टानिक। त्रिलोचन जी ने इन सभी प्रकार की रचना पद्वतियों में सॉनेट लिखे त्रिलोचन नं स्वय दिंगत में कहा है –

इधर त्रिलोचन सॉनेट के पथ पर दौडा,
सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला
यह उसने भी अजब तमाश मन की माला

त्रिलोचन ने लिखा है – ध्वनि ग्राहक हूॅ मै। समाज में उठने वाली ध्वनियॉ पकड लिया करता हूॅ बहुभाषाएं त्रिलोचन ने भाषाओ के समुद्व में अवगाहन किया है –

''भाषाओं के अगम समुद्रो कस अचगसहप मैने किया,
मुझे मानव जीवन की माया सदा मुग्ध करती है,
अहोरात्र आवाहन सुन सुनकर छाया धूपा मन
में भर लाया सब कुछ सब कुछ भाया।''

त्रिलोचन का काव्य सृजन कवि आत्मा से जनवाद की ओर जाता है। उसका आत्म सचेतस व संघर्षरत है तो उसके पीछे जनवादी चेतना के उत्तरदायित्व को वह वाहक है। प्रत्येक विषय पर बात कीजिए वे विषय से हमेशा बहुत दूर चले जाते थे। उन्हे किसी भी विषय में घेरना मुश्किल था। पर उनकी कविता की ताकत थी कि वह उन्हे घेर सकती थी। भाषा की जडे खोजना और शब्दो की व्युत्पति में उलझना उनका प्रिय व्यसन था। अरबी, फारसी, उर्दू और संस्कृत आदि भाषाओ में उनकी लिए ऐसी गति थी। लेकिन उनकी कविता उनके लिए ऐसी जगह होती थी जहां जीवन की जडे खोजने और जीवन की जड़े रोपने में वे इतनी तल्लीनता से प्रवृत होते थे कि भाषा वाला अपना प्रिय खेल खेलना उन्हे बिसर जाता था।

त्रिलोचन जितने मानव –सघर्ष के कवि है उतने ही प्रकृति की लीला और सौन्दर्य के भी इसलिए प्रकृति बहुत गहराई तक उनकी कविताओं में रची –बसी है। प्रकृति के बारे में त्रिलोचन का दृष्टिकोण बहुत कुछ उस ठेठ भारतीय किसान के दुष्टिकोण जैसा है जो कठिन श्रम के बीच में भी उगते हुए पौधो की हरियाली को देखकर रोमांचित होता है। निराला की तरह त्रिलोचन जी ने भी पावस के अनेक चित्र अंकित किये है और बादलों के कठोर संगीत को अपनी अने कविताओं में पकडने की कोशिश की है। परन्तु ऐसा करते हूए वे किसी विलक्षण सौन्दर्य लोक का निर्माण नही करते बल्कि अपनी चेतना के किसी कोने में दबे हुए किसान की रचना

भूमि का कोई ध्रुवीय संघर्ष नही है सामान्य जीवन के साधारण से लगते प्रसंग और उनके असाधारण बेधते प्रभाव यह उनके रचना संसार का दो टूक सच है। यह सत्य प्रवीति और प्रबोध की अंदरूनी बनावट से पैदा होता है जिसके लिए यथार्थ न तो सिर्फ एक कालावधि का प्रसंग है और न ही कल्पना कोई प्रगतिशील काव्य धारा के सशक्त रचनाकारों मं त्रिलोचन एक ऐसा सुपरिचित नाम है जिसकी रचनाओं में सहजानुभूति का खुला चित्रण है। कवि त्रिलोचन प्रगतिवादी रचनाकार होने के कारण सदैव विकासोन्नमुख रहे है। ये परम्परा के नही नवीनता के पोषक होने के नाते आधुनिकता में निरन्तरता की पहचान प्रस्तुत करने वाले अदभुत कवि है। त्रिलोचन रचनात्मक लेखन कार्य के साथ साथ कोश संपादन और पत्रिकरिता से भी जुडे रहे है। हॅस और कहानी जैसे उच्चस्तरीय और चित्रलेख में आप ने सह संपादक के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त कुछ वर्षो तक दिल्ली विश्वविद्यालय के द्वारा निर्माणधीन उर्दू हिन्दी कोष का संपादन कार्य भी किया। त्रिलोचन जी के शब्दो में –

शब्दो से कम नही चलता
जीवन को देखा है।
यहॉ कुछ और
इसी तरह यहॉ वहॉ
हरदम कुछ और
कोई एक ढंग सा काम नही करता

त्रिलोचन जी की कविता में भाषा शैली बिम्ब प्रतीक अंलकार छन्द सभी उनकी सवेदना से निर्मित भाव भूमि से जुडकर प्रस्तुत हुए है। उनकी कविता में थोड़ा सा भी काल्पनिक और कृत्रिमता प्रतीत नही होती। कवि यथार्थ की भूमि पर खडे होकर वास्तविक परिस्थितियों तथा अनुभूतियों का चित्रण करते है। त्रिलोचन ने आधुनिक कवियों में अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी कविता आधुनिक कविता के प्रचलित प्रतिमानों से अलग आलोचक से एक नये प्रकार के मुक्त और सीधे संबध की मॉग करती है। त्रिलोचन का व्यक्तित्व हिन्दी काव्य नभोमण्डल मे प्रभयुक्त होकर उर्ध्वाधर चमक रहा है। लोक जीवन की ऐसी स्वच्छ और जीवन तस्वीर हिन्दी जगत में प्रायः दुर्लभ है। वे अकृत्रिम सौन्दर्य और मानवीय गरिमा के कवि है। उनकी कविता हमारे जीवन संग्राम की कविता है। छोटे –छोटे विषय छोटे छोटे दुख उनकी कविताओं में बिंधे हुएह मिलेगे। जाहिर है कि इनकी कविता भारत की रोजमर्रा जिंदगी की कविता है। जिसमें आम जनजीवन की दुख दैन्य और पीड़ाएँ है। इनकी कविता में हिन्दी और उसकी अन्य बोलियों का अपार धैर्य है। त्रिलोचन के शब्दो का जादू पाठक को अपनी ओर खिचता है। शब्दो की गहराई और सादगी पाठक को मनभावक लगती है। वे आधुनिकता के पक्षधर है। उनकी प्रयोग की डगर सत्य की खोज है जनसे काव्य जगत को नई दिशा का ज्ञान होता है। नए कवियों को प्रेरणा मिलती है और काव्य नएपन के साथ जीवित भी रहता है। इसी कारण त्रिलोचन उस समुद्व की तरह हैं जिसमें शब्दो का भण्डार कभी खत्म नही होता। इनकी ज्ञान की गंगा रूपी शब्दकोष सराहनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिलोचन संचयिता पृ0 – 4,5
2. उस जनपद का कवि हू – त्रिलोचन शास्त्री पृ0 93
3. तुम्हे सौपता हूं – त्रिलोचन पृ0 –22
4. धरती – त्रिलोचन शास्त्री पृ0 – 68
5. दिगंत – त्रिलोचन शास्त्री पृ0 –37
6. अरधान – त्रिलोचन पृ0 –66
7. प्रतिनिधि कविताए – सम्पादन केदारनाथ सिंह –पृ0 24
8. ताप के ताए हुए दिन – त्रिलोचन पृ0 – 15

❖◆❖